L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A PART- 01
B.A PAPER- 01
PSYCHOLOGY (HONOURS)
SOCIAL PSYCHOLOGY

Dr. Pramod Kumar Sahu.
Assistent. Professor.
Guest Teacher.
V.S.J. college Rajnagar.
MADHUBANI (BIHAR)
pramod kumar sahu2018
@gmail.com.

TOPIC - Functions of Leaders

नेता व्यक्ति-समूह के लिए भिन्न-भिन्न तरह के कार्य को करता है। किसी समूह विशेष में नेता के कितने कार्य होंगे, यह मुख्यतः इस बात पर निर्भर करता है कि समूह के सामने मुख्य समस्याएँ कौन-कौन-सी हैं जिनका समाधान वह करना चाहता है। फिर भी सामान्य तौर पर एक नेता को कुछ खास-खास कार्य निश्चित रूप से करना होता है, चाहे समूह का स्वरूप जैसे भी हों, ऐसे प्रमुख कार्यों को दो भागों में बाँटा गया - प्रधान कार्य, तथा सहायक कार्य एवं दोनों का वर्णन निम्नलिखित है :-

(A) प्रधान कार्य - प्रधान कार्य से तात्पर्य वैसे कार्यों से होता है जिसे उन्हें करना नेता पद पर बने रहने के लिए आवश्यक हो जाता है। प्रमुख ऐसे कार्य निम्नांकित है।

(i) कार्यकारिणी के रूप में नेता - कार्यकारिणी के रूप में नेता समूह के कार्यक्रमों का संचालन एवं निर्देशन करता है। समूह के सब क्रियाओं का उसे सर्वोच्च संचालक माना जाता है। वह इन विभिन्न कार्यों का समूह के सदस्यों के बीच उचित बँटवारा भी करता है। कार्यकारिणी के रूप में वह समूह के किसी कार्य को स्वयं न करके बल्कि वह उसका कार्यभार दूसरे सदस्यों पर भी दे देता है। इस तरह से कार्यकारिणी के रूप में नेता एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

(ii) योजना निर्माता के रूप में नेता - नेता का दूसरा महत्वपूर्ण कार्य समूह के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए योजना बनाना होता है। इस रूप में नेता समूह के उद्देश्य एवं लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए विभिन्न साधनों एवं तरीकों का एक पूर्ण

II

योजना तैयार करता है। लक्ष्यों की प्राप्ति के अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन दोनों ही तरह की योजनाओं को नेता द्वारा ही बनायी जाता है। प्रायः यही विशेष नेता को ही पता होता है कि सामूहिक लक्ष्यों की प्राप्ति का कौन-कौन सा उत्तम तरीका एवं साधन हो सकता है तथा उन साधनों को कैसे जुटाया जा सकता है। आदि-आदि।

(III) नीति निर्माता के रूप में नेता - नेता समूह के लक्ष्यों एवं नीतियों का निर्माता भी होता है। किसी भी समूह में दो तरह की नीति हो सकती है। आंतरिक नीति तथा बाह्य नीति। चाहे नीति आंतरिक हो या बाह्य वह मुख्यतः तीन स्त्रोतों से उपजता है।

(i) कभी-कभी उच्चस्तरीय नेताओं द्वारा नीति का निर्धारण कर दिया जाता है, और इसे अपने अधीनस्थ नेताओं एवं सदस्यों को दे दिया जाता है। ऐसी परिस्थिति में भी अधीनस्थ नेताओं के विचारों को नीति निर्माण में जगह दी जाती है।

(ii) कभी-कभी समूह नीति का निर्धारण ऊपर से न होकर नीचे से ही होता है। ऐसी परिस्थिति में समूह के सभी सदस्य मिलकर एक ठोस नीति का निर्धारण करते हैं परंतु इसमें भी नेता स्वयं उपस्थित होकर सदस्यों द्वारा किये जा रहे विचार-विमर्श को निर्देशित करता है और इस तरह से नीति निर्धारण के साथ अपने आप को जोड़े रखता है।

(iii) जब नेता को नीति निर्माण करने की पूरी स्वतंत्रता होती है, तो वह स्वयं ही नीति का निर्माण कर लेता है। इस तरह से स्पष्ट है कि नीति के उद्भव का स्त्रोत कुछ भी क्यों न हो ठीक नीति-निर्धारण की अंतिम जिम्मेदारी नेता पर ही होता है।

(IV) विशेषज्ञ के रूप में नेता - नेता समूह सदस्यों के लिए एक विशेषज्ञ के रूप में भी कार्य करता है तथा परामर्श देता है। समूह के सदस्यों में किसी

विश्वास होता है, कि नेता के अपने समूह की समस्याओं के बारे में उच्चतम स्तर का ज्ञान होगा, यह विश्वास सदस्यों में जितना ही अधिक होता है नेता की शक्ति अधिक होती है जिससे नेता के नाते उसके शक्ति की स्वीकृति अधिक हो जाती है। इस विश्वास के कारण ही सदस्यगण आवश्यकता पड़ने पर नेता से मार्गदर्शन करने का आग्रह करते हैं। प्रायः देखा गया है कि धार्मिक नेता धर्म के बारे में राजनीतिक नेता राजनीति के बारे में तथा सामाजिक कार्य के बारे में विशेषज्ञ के रूप में अपनी सलाह अपने अपने समूह के सदस्यगणों को देते हैं।

(v) बाह्य प्रतिनिधि के रूप में नेता :- किसी भी बड़े समूह के सभी सदस्यों के लिए यह सम्भव नहीं है सब मिलकर ही पूरे समूह का प्रतिनिधित्व किसी बाह्य समूह के संगति में करें अतः समूह के बाह्य प्रतिनिधित्व का कार्य भार भी नेता को ही संभालना पड़ता है और अन्य समूह पर संपर्क उपस्थित होकर अपने सभी सदस्यों के विचारों एवं प्रतिनिधि के रूप में रखता है। इस तरह से नेता अपने समूह का अधिकारिक प्रवक्ता होता है। अपने समूह से बाहर जाने वाले सभी तरह की सूचनाओं एवं बाहर से अपने समूह में आने वाले सभी तरह की सूचनाओं का आदान-प्रदान अधिकारिक प्रवक्ता अर्थात नेता के ही माध्यम से होता है। इस विशेष कार्य में लेविन (Lewin) ने नेता को द्वारपाल की संज्ञा दी है।

(vi) आंतरिक सम्बन्धों के नियंत्रक के रूप में नेता - नेता अपने समूह के सदस्यों के आपसी एवं आंतरिक सम्बन्धों को निर्धारित एवं नियंत्रित करता है। उसका हर सम्भव प्रयास यही होता है कि सदस्यों के आपसी सम्बन्ध सौहार्दपूर्ण बने रहें इसके लिए वह अपने सदस्यों को समय-समय पर उपदेश भी देता है।

तथा उन्होंने सम्बन्धों की जानकारी बताकर उन्हें प्रेरित भी करता है। इस तरह से नेता अपने समूह के सदस्यों के आंतरिक संबंधों के एक नियंत्रक के रूप में कार्य करता है।

(vii) पुरस्कार एवं दण्ड के संवेदक के रूप में नेता – नेता अपने समूह के सदस्यों को दंड एवं पुरस्कार भी देता है। जो सदस्य समूह के मानक के अनुकूल व्यवहार करते हुए समूह लक्ष्यों की प्राप्ति में काफी मदद करते हैं नेता उन्हें उचित पुरस्कार देता है। यह पुरस्कार की स्वरूप कुछ भी हो सकता है। नेता ऐसे सदस्यों को नगद पुरस्कार भी दे सकता है या उसको पदोन्नति भी दे सकता है। दूसरे तरफ जो सदस्य के मानक के प्रतिकूल व्यवहार करते हैं तथा लक्ष्यों की प्राप्ति में विघ्न डालते हैं। उन्हें नेता उचित दंड भी देता है। दंड के रूप में सम्भव है कि नेता ऐसे सदस्यों को पदावनति कर दे या समूह से निष्कासित कर दे इस तरह से समूह के नेता सदस्यों को पुरस्कृत एवं दंडित करके अपने समूह पर उचित नियंत्रण बनाये रखता है।

(viii) पंच तथा मध्यस्थ के रूप में नेता – ऐसा देखा गया है कि कभी कभी समूह के सदस्यों के बीच आपस में मतभेद एवं संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। ऐसी परिस्थिति में नेता एक पंच तथा मध्यस्थ के रूप में कार्य कर सदस्यों की बीच आपसी मतभेद एवं संघर्ष को दूर करता है। इस समिति में वह तटस्थ पक्षविहीन सदस्य की बातों को सुनता है तथा उसके बाद एक अपना निर्णय देकर सदस्यों के मतभेद को दूर करता है।

Dr. Pramod Kumar Sahu,
Date- 06/09/2020,
Sub- Psychology

Scanned with CamScanner